सेना परिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम् ।

शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चाततता ।।19।।

अन्वय तस्य सेना परिच्छदः (आसीत्)। शास्त्रेषु अकुण्ठिता बुद्धिः धनुषि आतता मौर्वी च, द्वयमेव अर्थसाधनम् (अभूत्)

अनुवाद राजा दिलीप की सेना तो केवल उनकी शोभा के लिए ही थी, क्योंकि उनके प्रयोजन (की पूर्ति) के साधन दी ही थेः शास्त्रों में अकुंठित (तीक्ष्ण) बुद्धि तथा धनुष पर चढ़ी डोरी।

टिप्पणियां

सेना परिच्छदः राजा दिलीप की सेना रक्षा के कार्य के लिए न होकर चामर के समान केवल उनकी शोभा और वैभव बढ़ाने के लिए थी क्योंकि वे इतने दूरदर्शी और बलिष्ठ थे कि अकेले ही सब कार्य कर सकते थे। सेना तो वे रक्षा आदि किसी प्रयोजन के लिए नहीं अपितु शोभा के उद्देश्य के लिए रखते थे। सेना के दो ही मुख्य कार्य हैं- बाह्य आक्रमण से रक्षा तथा आन्तरिक अव्यवस्था को रोकना। महाराजा दिलीप का इतना प्रभाव था कि अन्य राजा उनके राज्य पर आक्रमण करने का साहस ही नहीं करते थे। साथ ही वे इतने नीतिकुशल तथा प्रजापालक थे कि प्रजा में अशान्ति की कोई सम्भावना ही नहीं थी। अतः इन दोनों में से कोई भी कार्य न होने से उनकी सेना केवल अलङ्करण मात्र ही थी।

द्वयम् राजा के सभी कार्य केवल दो चीजों- उनकी सूक्ष्मदर्शी बुद्धि और उनकी धनुष पर चढ़ी डोरी-से ही सिद्ध हो जाते थे। उन्हें सेना की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। भाव यह है कि चक्रवर्ती दिलीप में नीति और शक्ति दोनों का समन्वय था। नीति के बिना

अकेली उनकी शक्ति प्रवृत्त नहीं होती थी। अतएव उन्हें सदा सफलता प्राप्त थी। कहा भी है ''कातर्यं केवला नीतिः, शौर्यं श्वापदचेष्टितम्''- रघुवंश, 17, 47।

अकुण्ठिता: वह बुद्धि जो मन्द नहीं होती थी अर्थात् जो सूक्ष्मदर्शी थी।

आतता- आ उपसर्ग धातु तन् क्त .टाप्। (धनुष पर) चढ़ी हुई।